बातों बातों में कुछ ख़ास है???!!

मार्च 2024

पार्वतीबाई चौगुले महाविद्यालय
हिंदी विभाग

संपादकीय

प्राध्यापिका - अलका गावस

छात्रों में साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया है। इस पत्रिका के अंतर्गत छात्रों द्वारा रचित आलेख, कहानी, कविता, निबंध, चुटकुले और पहेलियाँ हैं।

मार्गदर्शक - डॉ प्रदीप जटाळ

अनुक्रमणिका

आलेख

1. मै लड़की हूँ इसलिए? - सदियाबि मदग्मसुर (पृ क्र. 4)
2. स्वस्थ जीवन स्वस्थ मन - सपना राजपुरोहित (पृ क्र. 5)

कहानी

3. गांव में ढिंढोरा - सपना राजपुरोहित (पृ क्र. 6-7)

कविताएँ

4. जिंदगी, झाँकना - मुज़रिन मुल्ला (पृ क्र. 8)

निबंध

5. बेरोजगारी एक समस्या - गुलाबी कदम (पृ क्र.9)

चुटकुले

6. हंसी का मस्त सफर - रिद्धि नाईक (पृ क्र. 10)

पहेलियाँ

7. बूझो तो जाने - गुलाबी कदम (पृ क्र.11)

आलेख
सादियाबि मदग्मसुर

मैं लड़की हूँ इसलिए?

आज मेरे और दुनिया के हर उस लड़की के अन्दर छुपी आवाज़ आप सबको कुछ बयाँ कर रही है | मैं वह हूँ जिसका जन्म होने पर हर किसी को पछतावा होता है क्योंकि मैं एक लड़की हूँ। मेरे पैदा होने पर वे खुशियाँ नहीं मनाते, बल्कि उन्हें मेरे विवाह के खर्च की फिकर सताने लग जाती है| कई जगह तो मेरा जन्म होते ही कई माँ-बाप मुझे बेदर्दी से मुझे किसी जंगल या किसी कूड़ेदान में फेंक देते है तो कभी मेरा गर्भपात करा देते है, जानते हो क्यूँ ! मैं लड़की हूँ इसलिए | समाज ने भी मुझे कभी नहीं अपनाया, कभी मेरे शिक्षा पर रोक लगादी तो कभी मेरे आजादी पर प्रतिबंध | मुझे अपने घर में भी अपनाया नहीं जाता, माँ कहती है कि मुझे पराए घर जाना है, तो सास कहती है तू पराए घर से आयी है | क्या मेरा अपना कोई घर नहीं है?

यह तो वही कहावत हो गई जो कहते है “न घर की न घाट की” मुझसे कहा जाता है तुम लड़की हो घर के काम करो यह तुम्हारी पहचान है | क्या इसी से हमारी पहचान है ? हमें तो अपने घर में भी चैन नहीं मिलता है, खुल कर हस लिया तो माँ चिल्लाने लगती है यह कह कर कि तुम लड़की हो तुम्हारी आवाज़ घर के बाहर नहीं जानी चाहिए, आखिर हमारा गुनाह क्या है ? आखिर मैं भी तो सबकी तरह इंसान हूँ | क्या मुझे अपना जीवन जीने का हक नहीं है? मैं भी तो घूमना चाहती हूँ, दुनिया देखना चाहती हूँ, अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हूँ, कुछ बनना चाहती हूँ, क्या इस से मेरी पहचान नहीं होगी? मुझे ही क्यों डर कर जीना होता है? क्यों मेरे साथ भेदभाव किया जाता है? मनुष्य को आख़िर एक ही जीवन मिलता है मैं भी तो नील गगन में उड़ना चाहती हूँ, अपना मकाम बनाना चाहती हूँ | मेरा भी तो सपना है कि मेरे माँ-बाप को मेरे होने पर गर्व हो | क्या यह मेरा अधिकार नहीं है? मेरी भी तो अपनी इच्छाएँ हैं .....
क्या उनका कोई मूल्य नही है .....|

सपना राजपुरोहित

स्वास्थ्य जीवन और मन

आज के इस दौर में सभी मनुष्य इतने व्यस्त हो गए हैं कि उन्हें अपने स्वास्थ्य की बिल्कुल फ़िक्र नहीं है । मनुष्य को अपने स्वास्थ के बारे में भी विचार करना चाहिए । स्वास्थ्य मनुष्य के जीवन का बहुमूल्य धन होता है । यदि उस धन को कुछ हो जाए तो व्यक्ति कोई कार्य ठीक से नहीं कर पाता है। यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा तो हमारा मन भी विचलित होता रहेगा । एक बार मन विचलित हो गया तो वह देह को शक्तिहीन कर देता है। मनुष्य अपने जीवन में पूरी तरह से पराजय मानने लगता है । जिसके कारण व्यक्ति को बूरे-बूरे ख़्याल आते हैं । वे अपने कार्य पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं । उनके स्वभाव में कई सारे परिवर्तन होते हैं । आज की युवा पीढ़ी भी इसका शिकार हो गईं हैं । वे भी अपने स्वास्थ्य की कोई परवा नहीं करते हैं । बाहर के खाने का अधिक सेवन करते हैं । घर का खाना उन्हें पसंद नहीं आता है ।

हर एक व्यक्ति को बाह्य देह के स्वास्थ्य के साथ मन के स्वास्थ्य का भी ख्याल रखना अनिवार्य है। यदि हाथ पर चोट लग जाए तो उस पर दवा लगाई जा सकती है। लेकिन यदि एक बार मन का स्वास्थ्य आहत हो जाए तो उस पर कोई भी दवा का असर नहीं होता है । इसके चलते कई सारी बीमारियों का जन्म होता है । मनुष्य को ऐसी अनगिनत बीमारियाँ होती है जो मनुष्य को अंदर से खोखला कर देती है । इसलिए हमें हमारे स्वास्थ्य का बहुत ख़्याल रखना चाहिए । मनुष्य को अपने स्वास्थ के लिए पौष्टिक खाने का आहार ग्रहण करना चाहिए, व्यायाम करना चाहिए और अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताना चाहिए । स्वास्थ्य को लेकर हमें हमारे जीवन में गंभीर होना चाहिए क्योंकि स्वास्थ्य है तो सब कुछ है। बिना उत्कृष्ट स्वास्थ्य के कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाता है । इसलिए हमें हमारे बारे में भी कभी सोचना चाहिए । उसके लिए उचित विचार कर अपना आहार ग्रहण कर तनाव मुक्त जीवन जीना चाहिए ।

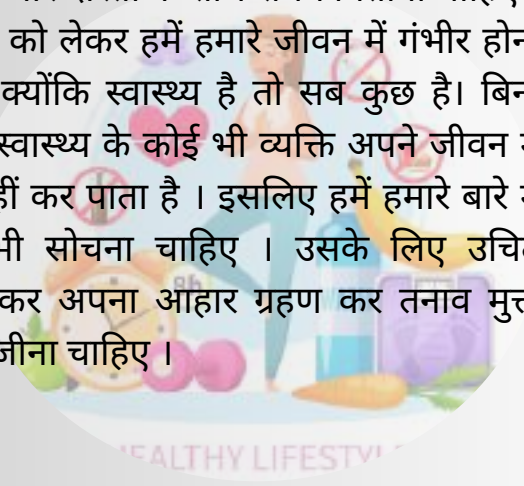

कहानी
सपना राजपुरोहित

गांव में ढिंढोरा

गांव में सब जगह हड़कंप मच गयी थी । सभी लोग ठेकेदार के घर के बाहर जमा हो गए थे । सभी लोगों उनके घर के बारे में आपस में बात कर रहे थे । राजू क्या तुम्हें पता है? कल रात को शालु ठेकेदार के घर चोरी हो गई है । सुना है गहनें चोरी हो गए हैं ।धानु जी सुना तो मैंने भी था पर उनके साथ बहुत बुरा हुआ ना। हां मुझे तो लगता है उसके गहने उस भीवाराव ने ही चुराएं हैं । क्यों तुम्हें ऐसा क्यों लगता है? क्या तुम्हें पता नहीं जिसके पास दो कौड़ी रुपए नहीं थे ठेकेदार जी को ब्याज के पैसे देने के लिए। परंतु अचानक उसके पास इतने पैसे कैसे आ गए और उन्होंने उनको रातों-रात ब्याज के पैसे दे दिए। उसके पास एक ही दिन में इतने सारे पैसे कहां से आ गए ? मुझे तो लगता है लालच के कारण कही उसी ने तो.....।

नहीं मुझे नहीं लगता राजू जी । पैसा व्यक्ति को अंधा कर देता है जी। शायद उसके साथ भी यही हुआ होगा। वहां दारोगा जी ठेकेदार से चोरी के बारे में पूछताछ कर रहे थे । उनका कहना था कि उन्होंने कल रात अपने संदुक में गहनें रखे थे पर अब वे वहां नहीं है। वे दारोगा जी से अनुरोध करते हैं कि वे उस चोर को जल्द से जल्द पकड़ ले । उनका कहना था कि उन्हें भीवाराम पर शक है । तो वे सभी लोग भीवाराम के घर जाते हैं।

भीवाराम और उसकी पत्नी दारोगा को अपने घर में देखकर चकित रह जाती है । वह दारोगा जी से कहता है कि क्या हुआ साहब आप सभी यहां क्या कर रहे हैं? तो ठेकेदार जी उस पर क्रोधित होकर कहते हैं कि तूने ही मेरे गहने चुराए हैं ना । बोल तूने मेरे घर चोरी क्यों की है । साहेब मैंने आपके घर पर चोरी नहीं की है।

तो फिर तूने मेरा ब्याज कैसे चुकाया? साहेब आपके रुपए चुकाने के लिए मैं अपनी बकरियों और घोड़े की छोटी सी मूर्ति बेचने बाजार गया था । लेकिन कोई भी मेरी वे दुर्बल सी बकरियां लेने को तैयार नहीं थे । तो मैं हताश होकर चौक में बैठ गया । तब वहीं से एक अंग्रेज अपनी बड़ी गाड़ी में आकर मेरे सामने खड़ा हो गया था। उसने मुझसे अंग्रेजी भाषा में कुछ कहा पर मुझे कुछ समझ नहीं आया था । तो मुझे लगा कि वह मेरे बकरियों के बारे में बात कर रहा है । तो मैंने उसे कहा कि 10 हजार रुपए में बकरियां दुगा।

लेकिन उसने मुझे 10 हजार की बजाय 5 लाख रुपए दिए थे । मैंने उसे लेने से इनकार भी किया था पर उसने मुझसे बहुत अनुरोध किया । मुझे पैसों की सख्त जरूरत थी इसलिए मैंने वह सारे पैसे ले लिए थे। लेकिन जब मैं उसे अपनी बकरियां दि तो उसने वह लेने से इनकार कर दिया था । वो मेरे द्वारा बनाया गया घोड़े का पुतला लेकर चला गया था । मैं यह देख कर चकित रह गया कि वह इन बकरियों की जगह उस घोड़े की मूर्ति के रुपए मुझे देकर चला गया । ठेकेदार उसकी बात पर विश्वास नहीं कर रहे थे ।

तो वह कहता है कि नहीं साहेब यही सच है । आप चाहे तो उनसे जाकर पूछ सकते हैं, मैं सच कह रहा हूं। दारोगा जी जब उनके घर जाकर पूछताछ करते है तो उन्हें पता चलता है कि वह सच कह रहा था। पुलिस चोर की पूछताछ करने के लिए दूसरे गांव में चली गयी थी । ठेकेदार उदास सा चेहरा लेकर अपने घर में चिंता में मग्न था । उसकी पत्नी उसको सहानुभूति दे रही थी और कह रही थी कि जिसने भी हमारे गहने चुराए हैं वह नरक में वास करेगा उसका कभी भला नहीं होगा। शाम हो जाती है। शाम को दारोगा जी राजूवशी को लेकर ठेकेदार के घर आती है और कहती है कि इन्हीं ने ही तुम्हारे गहने चुराए थे।

तो वह रो कर ठेकेदार के पैर पकड़ता है और कहता है कि साहेब यह सब झूठ है मैंने आपके गहने नहीं चुराए हैं । यह तो आपके बच्चे ने ही मेरे बच्चे को दिए थे । ठेकेदार उसे अपने पैरो से झटकते हैं और कहते हैं कि यह सब झूठ बोल रहा है मेरा नादान सा बच्चा अपने ही बाप के गहने चोरी करके तुझे क्यों देगा । साहब में सच कह रहा हूं ।

आप चाहे तो अपने बेटे से पूछ लीजिए साहब । तब दरोगा जी कहते हैं कि शायद हमें आपके बेटे से भी एक बार पूछ लेना चाहिए । तसल्ली करने में क्या हर्ज है । तो वे अपने बच्चे सूरज को बुलाते है और उनसे पूछते हैं कि क्या वह सच कह रहे हैं। तो वह कहता है कि हाँ पापा वे काका सच कह रहे हैं मैंने ही उनको सारे गहने दिए थे। तो वह उनसे पूछते हैं कि तुमने ऐसा क्यों किया?

तो उसने कहा कि उसका दोस्त जय कुछ दिनों से पाठशाला नहीं आ रहा था क्योंकि उसके पास पाठशाला के लिए पैसे नहीं थे । तो मैंने सोचा हमारे पास तो बहुत सारे पैसे हैं । इसलिए मैंने हमारे कुछ पैसे उसको दे दिए । ताकि वह मेरे साथ स्कूल आ सके और मैं उसके साथ पाठशाला में पढ़ पाऊँ।

पिताजी ने यह बात सुन बेटे को अपने गले से लगा लिया और जय की पढ़ाई की पूरी ज़िम्मेदारी अपने सिर पर ले ली।

ज़िंदगी

कल एक झलक ज़िंदगी को देखा,
वह राहों पे मेरी गुनगुना रही थी ।

फिर ढूँढा उसे इधर उधर,
वह आँख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी ।

एक अरसे के बाद आया मुझे क़रार,
वह सहला के मुझे सुला रही थी ।

हम दोनों क्यों ख़फ़ा हैं एक दूसरे से
मैं उसे और वह मुझे समझा रही थी ।

मैंने पूछ लिया- क्यों इतना दर्द दिया कमबख्त तूने,
वह हँसी और बोली- मैं जिंदगी हूँ पगले तुझे जीना सिखा रही थी ।

झाँकना

झाँक रहे है इधर उधर सब,
अपने अंदर झांकें कौन?
ढूंढ़ रहे दुनियाँ में कमियां अपने मन में ताके कौन?
सबके भीतर दर्द छुपा है,
उसको अब ललकारे कौन?
दुनियाँ सुधरो सब चिल्लाते,
खुद को आज सुधारे कौन

बेरोजगारी: एक समस्या

'बेरोजगारी', एक समस्या है जो आज के समय में तीव्रता से बढ़कर समाज के विभिन्न वर्गों को प्रभावित कर रही है । यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें लोग, काम पाने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं पर रोजगार प्राप्त करने में वे असफल हो जाते हैं।

बेरोजगारी के कई कारण हैं, जिनमें बदलते और बढ़ते आर्थिक आधार, तकनीकी प्रगति, और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार शामिल हैं । तकनीकी बदलाव के कारण, कुशलता और नौकरी के लिए आवश्यक योग्यता में बदलाव हुआ है और इसके कारण कई लोग अपने क्षेत्र में नौकरी नहीं पा रहे हैं ।
भ्रष्टाचार के कारण भी कई सारे युवा अपने मन मुताबिक नौकरी प्राप्त करने से वंचित रह जाते है । अपनी कार्य क्षमता से कम औदा मिलने के फलस्वरूप वे बेरोजगार ही रहना पसंद करते हैं ।

इसमें एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है शिक्षा की गुणवत्ता में कमी । बड़े होते हुए भी कई लोग शिक्षा से वंचित रहते हैं और उन्हें अच्छी नौकरी पाने में कठिनाई होती है ।

इसके अलावा, युवा वर्ग को अभ्यास और प्रशिक्षण के साथ-साथ सीधे रूप से विभिन्न व्यापारिक या व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रवेश के लिए उत्साही बनाए रखने के लिए उपाय किए जाने चाहिए।

इस समस्या का सीधा प्रभाव समाज पर हो रहा है। बेरोजगार युवा समाज की सामाजिक और आर्थिक विकास में सहायक नहीं बल्कि उसमें एक बड़ी समस्या बना रहता है । ये युवा बेरोजगार रहने के कारण आत्म-समर्थन में कमी महसूस करते हैं, जिससे उनमें निराशा और आत्महत्या की भावना उत्पन्न हो सकती है।

इस समस्या को सुलझाने के लिए समाज, सरकार, और व्यापारिक संगठनों को साथ मिलकर काम करना होगा । सरकार को नौकरी सृष्टि को बढ़ाने, उद्यमिता को प्रोत्साहित करने, और विभिन्न क्षेत्रों में नौकरियों के अवसर प्रदान करने के लिए योजनाएं बनानी चाहिए। समाज को भी युवा पीढ़ी को शिक्षित बनाने, नौकरी या उद्यमिता की दिशा मैं मार्गदर्शन करने और उन्हें समर्थ बनाने के लिए अपना सहयोग प्रदान करना चाहिए ।

चुटकुले
रिद्धि नाईक

हंसी का मस्त सफर

1) किसी ने मुझसे पूछा: आपके दिल के सबसे करीब कौन है ?

मैंने भी कह दिया फेफड़ा

2) सर चक्करा गया जब वो 'भुट्टे ' को देखकर बोली...

मेरे लिए वो 'हैण्डल वाला' पोपकोर्न लेकर आओ !!

3) पहली बार कोई चाईनीज़ प्रॉडक्ट गारंटी के साथ आई हैं....

कोरोना मौत की 101% गारंटी!!

4)टीचर : दुनिया में पोस्टमैन तो बहुत होते हैं लेकिन

"पोस्ट-वुमेन" क्यों नहीं ?

स्टूडेंट : इसलिए क्योकि वुमन एक ही डिलिवरी में 9 महीने लगा देती है ...

5)टीचर: तुम्हारा नाम क्या है!

बच्चा: निसार!

टीचर: तुम्हारा जन्म कैसे हुआ!

बच्चा: जवानी जानेमन, हसीन दिलरुबा, मिले जो दिल जवा, निसार हो गया ।

बूझो तो जाने ?

1.पहेली: जलती रहती हूँ, पर आग नहीं लगाती हूँ, मैं क्या हूँ?

2.पहेली: सात समुंदर पार, फिर भी पानी नहीं है, बताओ क्या है?

3.पहेली: एक बूंद में भरी, आसमान से गिरी, बताओ क्या है?

4.पहेली: सूरज की साड़ी, चाँदनी का झूला, बताओ क्या है?

5.पहेली: हमेशा बढ़ती, कभी कम नहीं होती, बताओ क्या है?

6.पहेली: सफेद चिंगारी, काला धुप, बताओ क्या है?

1.रोशनी
2.हवा
3.चांदनी
4. दिन
5. उम्र
6. किताब